

ग्रामीण बालिका शिक्षा में सामाजिक समर्थन और शैक्षिक निरंतरता का विश्लेषण

शालिनी साहू

सहायक प्राध्यापक,

संस्कार सिटी कॉलेज ऑफ एजुकेशन,

राजनांदगांव, छत्तीसगढ़



<http://www.ujhmds.org/> || Vol. 2 No. 3 (2026): Special August Issue

Date of Submission: 02-07-2026

Date of Acceptance: 22-07-2026

Date of Publication: 17-08-2026

सारांश— ग्रामीण भारत में बालिका शिक्षा की निरंतरता एक गंभीर चुनौती बनी हुई है जहाँ अनेक बालिकाएँ विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारणों से माध्यमिक स्तर तक पहुँचने से पूर्व ही विद्यालय छोड़ देती हैं। प्रस्तुत शोधपत्र ग्रामीण बालिकाओं की शैक्षिक निरंतरता में सामाजिक समर्थन — पारिवारिक, सहकर्मी, विद्यालयी एवं सामुदायिक — की भूमिका का विश्लेषण करता है। इस अध्ययन में बिहार के चार जनपदों के ग्रामीण क्षेत्रों से कक्षा 9 से 12 में अध्ययनरत 350 बालिकाओं (जो विद्यालय में बनी हुई हैं) तथा 150 विद्यालय-त्यागी बालिकाओं, कुल 500 प्रतिभागियों का प्रतिदर्श चयनित किया गया। कारण-तुलनात्मक अभिकल्प के अंतर्गत दोनों समूहों के कथित सामाजिक समर्थन की तुलना की गई। परिणामों से ज्ञात हुआ कि विद्यालय में बनी रहने वाली बालिकाओं का कथित सामाजिक समर्थन प्राप्तांक ($M=78.42$) विद्यालय-त्यागी बालिकाओं ($M=51.63$) से सार्थक रूप से अधिक था ($t=16.82, p<0.01$)। सामाजिक समर्थन के चारों आयामों में पारिवारिक समर्थन सबसे प्रबल विभेदक पाया गया। लॉजिस्टिक प्रतिगमन विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि सामाजिक समर्थन शैक्षिक निरंतरता की 68% सही भविष्यवाणी करता है। अध्ययन अनुशंसा करता है कि बालिका शिक्षा नीतियों में परिवार एवं समुदाय आधारित समर्थन तंत्र को सुदृढ़ करने पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

मुख्य शब्द: बालिका शिक्षा, सामाजिक समर्थन, शैक्षिक निरंतरता, विद्यालय त्याग, ग्रामीण शिक्षा, लैंगिक असमानता

प्रस्तावना

भारत ने विगत दो दशकों में बालिका शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। सर्व शिक्षा अभियान, मध्याह्न भोजन योजना, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय और सुकन्या समृद्धि योजना जैसी अनेक पहलों ने बालिकाओं के नामांकन अनुपात में वृद्धि की है। एकीकृत जिला शिक्षा सूचना प्रणाली (UDISE+) के आँकड़ों के अनुसार प्राथमिक स्तर पर लैंगिक समता सूचकांक (Gender Parity Index – GPI) लगभग 1.0 तक पहुँच गया है, जो नामांकन में लैंगिक अंतर के लगभग समाप्त होने का संकेत है (शिक्षा मंत्रालय, 2022)। तथापि, नामांकन में सुधार और शैक्षिक निरंतरता दो भिन्न वास्तविकताएँ हैं। UDISE+ 2021-22 के आँकड़े दर्शाते हैं कि माध्यमिक स्तर (कक्षा 9-10) पर बालिकाओं की ड्रॉपआउट दर ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी चिंताजनक स्तर पर है, और उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा 11-12) तक पहुँचते-पहुँचते यह अंतर और गहरा हो जाता है।

शैक्षिक निरंतरता से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसमें विद्यार्थी विद्यालय में नियमित रूप से बना रहता है, एक कक्षा से दूसरी कक्षा में उन्नत होता है और शिक्षा का निर्धारित चरण पूर्ण करता है। बालिकाओं के विद्यालय त्याग के कारणों को समझने के अनेक प्रयास हुए हैं — निर्धनता, बाल विवाह, विद्यालय की दूरी, शौचालय की अनुपलब्धता, पारिवारिक दायित्व, सुरक्षा की चिंता — ये सभी प्रलेखित कारक हैं। किंतु इन बाधाओं के बावजूद अनेक बालिकाएँ अपनी शिक्षा जारी रखती हैं — कभी-कभी अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में भी। यह प्रश्न महत्वपूर्ण है कि ऐसा कौन-सा सुरक्षात्मक कारक है जो कुछ बालिकाओं को बनाए रखता है जबकि समान परिस्थितियों वाली अन्य बालिकाएँ विद्यालय छोड़ देती हैं?

सामाजिक समर्थन से मिलती है आगे बढ़ने की ताकत

परिवार, सहपाठी, विद्यालय और समुदाय का सहयोग
बनाता है बालिका शिक्षा की मजबूत नींव



सामाजिक समर्थन सिद्धांत इस प्रश्न का एक संभावित उत्तर प्रस्तुत करता है। कोब (1976) ने सामाजिक समर्थन को ऐसी सूचना के रूप में परिभाषित किया जो व्यक्ति को यह विश्वास दिलाती है कि उसकी देखभाल की जा रही है, उसे प्रेम किया जाता है, उसका सम्मान है और वह एक सामाजिक नेटवर्क का अंग है। शैक्षिक संदर्भ में, सामाजिक समर्थन उन सभी प्रकार की सहायताओं को सम्मिलित करता है जो बालिकाओं को उनके परिवार, सहकर्मी समूह, शिक्षकों और समुदाय से प्राप्त होती हैं — चाहे वह भावनात्मक प्रोत्साहन हो, आर्थिक सहायता हो, शैक्षिक मार्गदर्शन हो, या सामाजिक स्वीकृति। प्रस्तुत शोध इसी सामाजिक समर्थन की शैक्षिक निरंतरता में भूमिका का अनुभवजन्य परीक्षण करता है।

साहित्य समीक्षा

बालिका शिक्षा और सामाजिक समर्थन के अंतर्संबंध पर भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों परिप्रेक्ष्यों से व्यापक शोध उपलब्ध है।

कोब (1976) ने सामाजिक समर्थन के सैद्धांतिक ढाँचे को प्रस्तुत करते हुए दर्शाया कि सामाजिक समर्थन एक तनाव-मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है — अर्थात् यह प्रतिकूल परिस्थितियों के नकारात्मक प्रभाव को कम करता है। शैक्षिक संदर्भ में इसका अर्थ है कि यदि बालिका को पर्याप्त सामाजिक समर्थन प्राप्त है, तो निर्धनता या सामाजिक बाधाओं के बावजूद वह शिक्षा जारी रखने में सक्षम हो सकती है। ब्रोनफेनब्रेनर (1979) के पारिस्थितिकी तंत्र सिद्धांत ने यह प्रतिपादित किया कि बालक का विकास उसके तात्कालिक वातावरण (परिवार, विद्यालय) से लेकर व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण तक, अनेक परस्पर-संबद्ध तंत्रों से प्रभावित होता है। बालिका शिक्षा के संदर्भ में यह सिद्धांत विशेष रूप से प्रासंगिक है क्योंकि शैक्षिक निरंतरता किसी एक कारक पर नहीं, बल्कि पारिवारिक, विद्यालयी और सामुदायिक — सभी स्तरों की परस्पर क्रिया पर निर्भर करती है।

ट्रेज़ एवं सेन (2013) ने भारतीय शिक्षा की व्यापक विवेचना करते हुए तर्क दिया कि बालिका शिक्षा में बाधाएँ प्रमुखतः सामाजिक हैं, आर्थिक नहीं — अर्थात् यदि समाज में बालिका शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण हो, तो परिवार आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद बालिकाओं को पढ़ाने का प्रयास करते हैं। यह अवलोकन सामाजिक समर्थन की केंद्रीय भूमिका की ओर संकेत करता है।

कुमार (2015) ने बिहार की ग्रामीण बालिकाओं के विद्यालय त्याग के कारणों का अध्ययन किया और पाया कि बाल विवाह (32%), पारिवारिक दायित्व (26%), आर्थिक कारण (22%) और सुरक्षा चिंताएँ (12%) प्रमुख कारण थे। उन्होंने यह भी पाया कि जिन बालिकाओं के पिता शिक्षा के प्रति सकारात्मक थे, उनमें विद्यालय त्याग की दर सार्थक रूप से कम थी — इससे पारिवारिक समर्थन की भूमिका रेखांकित होती है।

शर्मा एवं त्रिपाठी (2016) ने ग्रामीण बालिकाओं की शिक्षा में माता की शैक्षिक स्थिति और समर्थन की भूमिका का अध्ययन किया। उनके निष्कर्ष दर्शाते हैं कि शिक्षित माताओं की बालिकाएँ विद्यालय में अधिक समय तक बनी रहती हैं, किंतु अशिक्षित माताएँ भी यदि भावनात्मक प्रोत्साहन प्रदान करें, तो बालिकाओं की शैक्षिक निरंतरता में सार्थक सुधार होता है। पांडेय (2017) ने सहकर्मी समूह की भूमिका पर अध्ययन किया और पाया कि जिन बालिकाओं का मित्र समूह शिक्षा-उन्मुख था, उनमें विद्यालय त्याग की संभावना कम थी। सहकर्मी समर्थन ने विशेष रूप से किशोरावस्था में — जब पारिवारिक दबाव बढ़ता है — एक सुरक्षात्मक कारक के रूप में कार्य किया।

मिश्रा एवं सिंह (2018) ने शिक्षक-विद्यार्थी संबंध और बालिकाओं की शैक्षिक निरंतरता के अंतर्संबंध का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि जिन विद्यालयों में महिला शिक्षिकाओं की संख्या अधिक थी और शिक्षक बालिकाओं के प्रति सहानुभूतिपूर्ण एवं प्रोत्साहनपरक थे, वहाँ बालिकाओं का ठहराव सार्थक रूप से अधिक था। रावत (2019) ने कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों (KGBV) की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करते हुए बताया कि इन विद्यालयों ने आवासीय सुविधा, छात्रवृत्ति और सुरक्षित वातावरण प्रदान करके अनुसूचित जाति/जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक निरंतरता में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

गुप्ता एवं यादव (2020) ने ग्रामीण समुदायों में बालिका शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में आए परिवर्तनों का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि पिछले दशक में ग्रामीण परिवारों — विशेषकर युवा पीढ़ी के माता-पिता — में बालिका शिक्षा के प्रति सकारात्मकता बढ़ी है, किंतु यह परिवर्तन असमान है और जाति, वर्ग एवं क्षेत्र के आधार पर भिन्न है। चौहान (2021) ने कोविड-19 महामारी के बालिका शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि लॉकडाउन के कारण बालिकाओं पर घरेलू कार्यभार बढ़ा, विद्यालय बंद रहने से शिक्षा से संपर्क टूटा, और अनेक परिवारों ने आर्थिक

संकट के कारण बालिकाओं की शिक्षा बंद करने का निर्णय लिया — इस अवधि में सामाजिक समर्थन तंत्र और भी अधिक निर्णायक हो गया।

दुबे एवं वर्मा (2022) ने ग्रामीण बालिकाओं में आत्म-प्रभावकारिता और शैक्षिक आकांक्षाओं पर सामाजिक समर्थन के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि सामाजिक समर्थन ने बालिकाओं की आत्म-प्रभावकारिता को बढ़ाया, जिसने बदले में उनकी शैक्षिक आकांक्षाओं और निरंतरता को प्रभावित किया — अर्थात् आत्म-प्रभावकारिता एक मध्यस्थ चर के रूप में कार्य कर रही थी। जायसवाल (2023) ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बालिका शिक्षा संबंधी प्रावधानों — जैसे लिंग-समावेशन कोष और काउंसिलिंग सेवाओं — की समीक्षा करते हुए सुझाव दिया कि इन प्रावधानों के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सामुदायिक स्तर पर सामाजिक समर्थन तंत्र की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

उपरोक्त साहित्य से स्पष्ट है कि सामाजिक समर्थन बालिका शिक्षा की निरंतरता में एक महत्वपूर्ण कारक है, किंतु अधिकांश अध्ययन सामाजिक समर्थन के किसी एक आयाम (केवल पारिवारिक, या केवल शिक्षक) पर केंद्रित हैं। सामाजिक समर्थन के चारों आयामों — पारिवारिक, सहकर्मी, विद्यालयी एवं सामुदायिक — का एकीकृत विश्लेषण, विशेषकर विद्यालय में बनी रहने वाली और विद्यालय छोड़ चुकी बालिकाओं की तुलना के माध्यम से, अपेक्षाकृत सीमित है। प्रस्तुत शोध इसी अंतराल को संबोधित करता है।

शोध उद्देश्य

- विद्यालय में बनी रहने वाली और विद्यालय-त्यागी ग्रामीण बालिकाओं के कथित सामाजिक समर्थन में अंतर का परीक्षण करना।
- सामाजिक समर्थन के विभिन्न आयामों (पारिवारिक, सहकर्मी, विद्यालयी, सामुदायिक) में से शैक्षिक निरंतरता का सबसे प्रबल पूर्वकथक ज्ञात करना।
- विद्यालय-त्यागी बालिकाओं द्वारा प्रतिवेदित विद्यालय छोड़ने के कारणों का विश्लेषण करना।

परिकल्पनाएँ

H₁: विद्यालय में बनी रहने वाली बालिकाओं का कथित सामाजिक समर्थन प्राप्तांक विद्यालय-त्यागी बालिकाओं से सार्थक रूप से अधिक होगा।

H₂: सामाजिक समर्थन के चारों आयामों में पारिवारिक समर्थन शैक्षिक निरंतरता का सबसे प्रबल पूर्वकथक होगा।

शोध प्रविधि

शोध अभिकल्प: प्रस्तुत अध्ययन में कारण-तुलनात्मक अभिकल्प का प्रयोग किया गया, जिसमें दो पूर्व-विद्यमान समूहों — विद्यालय में बनी रहने वाली बालिकाएँ और विद्यालय-त्यागी बालिकाएँ — के कथित सामाजिक समर्थन की तुलना की गई।

जनसंख्या एवं प्रतिदर्श: बिहार के चार जनपदों (पटना, गया, मुज़फ़्फ़रपुर, पूर्णिया) के ग्रामीण क्षेत्रों से प्रतिदर्श चयनित किया गया। बहुस्तरीय प्रतिदर्शन द्वारा प्रत्येक जनपद से 6 गाँव (कुल 24 गाँव) चयनित किए गए।

समूह-1 (विद्यालय में बनी रहने वाली बालिकाएँ): कक्षा 9 से 12 में नियमित रूप से अध्ययनरत 350 बालिकाओं को यादृच्छिक रूप से चयनित किया गया।

समूह-2 (विद्यालय-त्यागी बालिकाएँ): उन्हीं गाँवों से 150 ऐसी बालिकाएँ चिह्नित की गईं जिन्होंने कक्षा 8 उत्तीर्ण करने के पश्चात् विद्यालय छोड़ दिया था (विगत तीन वर्षों के भीतर)। इनकी पहचान विद्यालय अभिलेखों, आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और ग्राम प्रधान की सहायता से की गई। सभी प्रतिभागी 14-19 आयु वर्ग की थीं।

उपकरण:

(अ) **कथित सामाजिक समर्थन मापनी:** शोधकर्ता द्वारा विकसित इस मापनी में 40 कथन सम्मिलित थे, जो चार उप-मापनियों में विभक्त थे — पारिवारिक समर्थन (12 कथन: माता-पिता का प्रोत्साहन, भाई-बहन का सहयोग, शिक्षा हेतु आर्थिक प्रतिबद्धता, गृह कार्य भार से मुक्ति), सहकर्मी समर्थन (8 कथन: मित्रों का प्रोत्साहन, सहपाठी सहयोग, शैक्षिक आदर्श), विद्यालयी समर्थन (12 कथन: शिक्षक प्रोत्साहन, शैक्षिक मार्गदर्शन, विद्यालय अवसंरचना, सुरक्षित वातावरण), तथा सामुदायिक समर्थन (8 कथन: समुदाय का दृष्टिकोण, रोल मॉडल की उपलब्धता, सरकारी योजनाओं की पहुँच)। प्रत्येक कथन पंचबिंदु लिकर्ट मापनी पर मापा गया। अधिकतम प्राप्तांक 200। विशेषज्ञ वैधता (5 शिक्षा एवं समाजशास्त्र विशेषज्ञों) एवं क्रोनबैक अल्फा विश्वसनीयता ($\alpha = 0.87$) स्थापित की गई।

(ब) **विद्यालय त्याग कारण अनुसूची:** विद्यालय-त्यागी बालिकाओं हेतु एक 15 कथनों वाली अनुसूची जिसमें विद्यालय छोड़ने के संभावित कारणों (आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक, विद्यालयी) को अंकित किया गया। प्रत्येक कारण पर बालिकाओं ने 'हाँ', 'कुछ हद तक' या 'नहीं' में उत्तर दिया।

आँकड़ा संग्रहण: विद्यालय में अध्ययनरत बालिकाओं से प्रश्नावली विद्यालय परिसर में एकत्र की गई। विद्यालय-त्यागी बालिकाओं से गृह भ्रमण द्वारा आँकड़ा संग्रहण किया गया। प्रश्नावली हिंदी एवं स्थानीय बोली

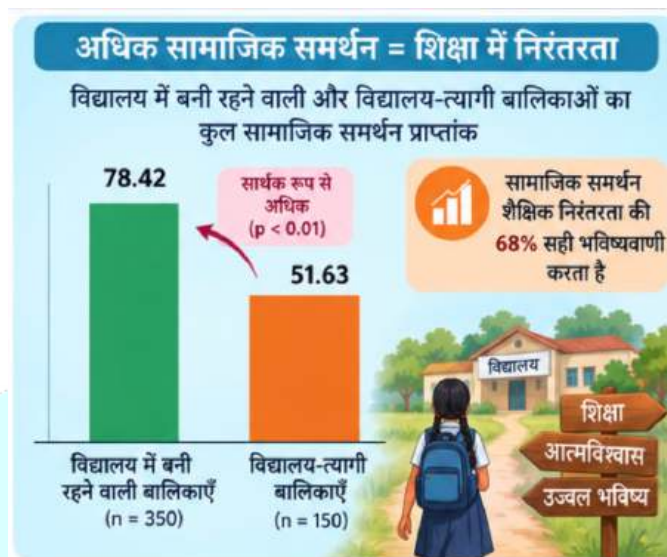
में मौखिक रूप से भी व्याख्यायित की गई। सभी प्रतिभागियों एवं उनके अभिभावकों से सूचित सहमति प्राप्त की गई।

सांख्यिकीय विश्लेषण: स्वतंत्र प्रतिदर्श t-परीक्षण (अंतर-समूह तुलना हेतु), बाइनरी लॉजिस्टिक प्रतिगमन (शैक्षिक निरंतरता के पूर्वकथकों हेतु) तथा बारंबारता एवं प्रतिशत विश्लेषण का प्रयोग किया गया। विश्लेषण SPSS (संस्करण 26) द्वारा किया गया।

परिणाम एवं विवेचना

तालिका 1: दोनों समूहों के सामाजिक समर्थन प्राप्तियों की तुलना (स्वतंत्र प्रतिदर्श t-परीक्षण)

सामाजिक समर्थन आयाम	विद्यालय में बनी रहने वाली (n=350) M (SD)	विद्यालय-त्यागी (n=150) M (SD)	t-मान	सार्थकता
पारिवारिक समर्थन (0-60)	41.36 (7.82)	24.18 (8.41)	21.26	p < 0.01
सहकर्मी समर्थन (0-40)	24.51 (5.46)	17.92 (5.83)	11.72	p < 0.01
विद्यालयी समर्थन (0-60)	39.87 (8.13)	27.64 (7.96)	15.12	p < 0.01
सामुदायिक समर्थन (0-40)	22.68 (5.71)	16.89 (5.48)	10.14	p < 0.01
कुल सामाजिक समर्थन (0-200)	78.42 (14.23)	51.63 (13.87)	16.82	p < 0.01



तालिका 1 के परिणाम अत्यंत स्पष्ट एवं सुसंगत हैं। सामाजिक समर्थन के प्रत्येक आयाम में तथा कुल प्राप्तियों में विद्यालय में बनी रहने वाली बालिकाओं के प्राप्तियों विद्यालय-त्यागी बालिकाओं से अत्यधिक सार्थक रूप से (p < 0.01) अधिक पाए गए। परिकल्पना H₁ की सशक्त पुष्टि होती है।

सबसे बड़ा अंतर पारिवारिक समर्थन में दिखा (41.36 बनाम 24.18), जो इस आयाम को सबसे प्रबल विभेदक बनाता है। इसका अर्थ है कि जिन बालिकाओं के परिवार — विशेषकर माता-पिता — शिक्षा के प्रति प्रतिबद्ध हैं, प्रोत्साहन देते हैं, आर्थिक सहायता प्रदान करते हैं और घरेलू कार्यभार से मुक्ति देते हैं, उन बालिकाओं की शैक्षिक निरंतरता की संभावना बहुत अधिक है। यह निष्कर्ष कुमार (2015), शर्मा एवं त्रिपाठी (2016) तथा ट्रेज़ एवं सेन (2013) के अवलोकनों से पूर्णतः मेल खाता है।

विद्यालयी समर्थन में भी उल्लेखनीय अंतर (39.87 बनाम 27.64) पाया गया, जो मिश्रा एवं सिंह (2018) के निष्कर्ष की पुष्टि करता है कि शिक्षकों का प्रोत्साहन और विद्यालय का सुरक्षित वातावरण बालिकाओं के ठहराव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामुदायिक समर्थन में अंतर (22.68 बनाम 16.89) अपेक्षाकृत कम, किंतु फिर भी सार्थक रहा — यह संभवतः इसलिए कि सामुदायिक समर्थन एक अप्रत्यक्ष (distal) कारक है जो परिवार और विद्यालय के माध्यम से कार्य करता है, जैसा कि ब्रोनफेनब्रेनर (1979) के पारिस्थितिकी मॉडल में वर्णित है।

लॉजिस्टिक प्रतिगमन विश्लेषण: शैक्षिक स्थिति (बनी रहना = 1, विद्यालय त्याग = 0) को आश्रित चर तथा चारों सामाजिक समर्थन उप-प्राप्तियों को स्वतंत्र चर के रूप में प्रविष्ट करने पर निम्न परिणाम प्राप्त हुए:

पूर्वकथक	B	Wald	Exp(B)/Odds Ratio	सार्वकता
पारिवारिक समर्थन	0.112	38.47	1.119	$p < 0.01$
विद्यालयी समर्थन	0.074	18.92	1.077	$p < 0.01$
सहकर्म समर्थन	0.053	8.41	1.054	$p < 0.01$
सामुदायिक समर्थन	0.039	4.82	1.040	$p < 0.05$

मॉडल का समग्र वर्गीकरण सटीकता 68% रही। पारिवारिक समर्थन सबसे प्रबल पूर्वकथक (Wald = 38.47, Odds Ratio = 1.119) पाया गया — अर्थात् पारिवारिक समर्थन प्राप्तों में एक इकाई वृद्धि से बालिका के विद्यालय में बने रहने की संभावना (odds) लगभग 12% बढ़ जाती है। इसके पश्चात् विद्यालयी समर्थन (OR = 1.077), सहकर्म समर्थन (OR = 1.054) और सामुदायिक समर्थन (OR = 1.040) का स्थान रहा। इस प्रकार परिकल्पना H_2 की पुष्टि होती है।

तालिका 2: विद्यालय-त्यागी बालिकाओं द्वारा प्रतिवेदित प्रमुख कारण (n=150)

विद्यालय त्याग का कारण	हाँ (%)	कुछ हद तक (%)	नहीं (%)
परिवार ने आगे पढ़ाना उचित नहीं समझा	48.67	21.33	30.00
घरेलू कार्य/छोटे भाई-बहनों की देखभाल	52.00	24.67	23.33
विवाह/विवाह का दबाव	27.33	18.67	54.00
आर्थिक कठिनाई (शुल्क, पुस्तकें, यातायात)	43.33	26.00	30.67
विद्यालय घर से बहुत दूर था	34.00	18.00	48.00
विद्यालय का वातावरण असुरक्षित/अनुकूल नहीं लगा	19.33	22.67	58.00
शिक्षक पढ़ने के लिए प्रोत्साहित नहीं करते थे	24.00	26.67	49.33
सहेलियों ने भी विद्यालय छोड़ दिया	36.67	20.00	43.33
पढ़ाई में रुचि/आत्मविश्वास नहीं रहा	22.00	28.00	50.00



तालिका 2 गुणात्मक गहराई प्रदान करती है। सर्वाधिक प्रतिवेदित कारण 'घरेलू कार्य/छोटे भाई-बहनों की देखभाल' (52%) रहा, जो दर्शाता है कि पितृसत्तात्मक संरचना में बालिकाओं से शिक्षा से पूर्व गृह-दायित्वों की अपेक्षा की जाती है। 'परिवार ने आगे पढ़ाना उचित नहीं समझा' (48.67%) दूसरा प्रमुख कारण रहा — यह सीधे पारिवारिक समर्थन के अभाव को प्रतिबिंबित करता है। 'आर्थिक कठिनाई' (43.33%) और 'सहेलियों का विद्यालय छोड़ना' (36.67%) भी महत्वपूर्ण कारण रहे। सहेलियों के विद्यालय छोड़ने का प्रभाव पांडेय (2017) के निष्कर्ष की पुष्टि करता है कि सहकर्म समूह शैक्षिक निरंतरता में एक शक्तिशाली कारक है — सकारात्मक और नकारात्मक दोनों दिशाओं में।

विवाह/विवाह के दबाव को 27.33% बालिकाओं ने प्रमुख कारण बताया, जो कुमार (2015) की तुलना में कम है — संभवतः इसलिए कि बाल विवाह के विरुद्ध सामाजिक जागरूकता और कानूनी कार्रवाई में कुछ वृद्धि हुई है, यद्यपि यह अभी भी एक गंभीर समस्या है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम स्पष्ट रूप से प्रमाणित करते हैं कि सामाजिक समर्थन ग्रामीण बालिकाओं की शैक्षिक निरंतरता का एक महत्वपूर्ण एवं बहुआयामी निर्धारक है। विद्यालय में बनी रहने वाली बालिकाओं और विद्यालय-त्यागी बालिकाओं के मध्य सामाजिक समर्थन में अत्यधिक सार्थक अंतर पाया गया, जो सामाजिक समर्थन सिद्धांत (कोब, 1976) और पारिस्थितिकी तंत्र सिद्धांत (ब्रोनफेनब्रेनर, 1979) दोनों की शैक्षिक संदर्भ में प्रयोज्यता को प्रमाणित करता है। सामाजिक समर्थन के चारों आयामों में पारिवारिक समर्थन सबसे प्रबल पूर्वकथक पाया गया, जो पुनः इस सत्य को रेखांकित करता है कि ग्रामीण भारत में बालिका शिक्षा की निरंतरता परिवार के दृष्टिकोण और सहयोग पर सर्वाधिक निर्भर है।

उपरोक्त निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित अनुशंसाएँ प्रस्तुत हैं:

बालिका शिक्षा नीतियों और कार्यक्रमों में परिवार आधारित हस्तक्षेप को केंद्रीय स्थान दिया जाना चाहिए। माता-पिता — विशेषकर पिता — के दृष्टिकोण परिवर्तन हेतु लक्षित जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। सफल शिक्षित बालिकाओं को 'रोल मॉडल' के रूप में प्रस्तुत करना एक प्रभावी रणनीति हो सकती है। आर्थिक बाधाओं को दूर करने हेतु सशर्त नकद हस्तांतरण (conditional cash transfer) योजनाओं को बालिकाओं की नियमित उपस्थिति और कक्षाव्रति से जोड़ा जाना चाहिए। विद्यालयों में महिला शिक्षिकाओं की नियुक्ति, शौचालय और सुरक्षा सुविधाओं का विस्तार, तथा शिक्षकों का लैंगिक संवेदनशीलता प्रशिक्षण विद्यालयी समर्थन को सुदृढ़ करेगा। सहकर्मि समर्थन को प्रोत्साहित करने हेतु 'मीना मंच' (यूनिसेफ की पहल) और बालिका मंडल जैसे मंचों को सक्रिय किया जाना चाहिए जहाँ बालिकाएँ परस्पर प्रोत्साहन और सहयोग कर सकें। सामुदायिक समर्थन सुदृढ़ करने हेतु पंचायती राज संस्थाओं, स्व-सहायता समूहों और धार्मिक/सामाजिक नेताओं की बालिका शिक्षा में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए।



शोध की सीमाएँ: यह अध्ययन केवल बिहार के चार जनपदों तक सीमित है और इसके निष्कर्षों का सामान्यीकरण अन्य राज्यों पर सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। कारण-तुलनात्मक अभिकल्प होने के कारण कारणात्मक निष्कर्ष सीमित हैं — यह संभव है कि सामाजिक समर्थन और शैक्षिक निरंतरता दोनों किसी तृतीय चर (जैसे सामाजिक-आर्थिक

स्थिति) से प्रभावित हों। विद्यालय-त्यागी बालिकाओं के प्रतिदर्श में चयन पूर्वाग्रह की संभावना है — जो बालिकाएँ साक्षात्कार हेतु उपलब्ध हुईं, वे संभवतः उन बालिकाओं से भिन्न हैं जो विवाह या प्रवास के कारण उपलब्ध नहीं हो सकीं। सामाजिक समर्थन का मापन स्व-प्रतिवेदन पर आधारित है, जिसमें स्मरण पूर्वाग्रह और सामाजिक वांछनीयता की संभावना बनी रहती है। भावी शोधकर्ताओं को अनुदैर्ध्य अभिकल्प, बहुस्तरीय मॉडलिंग और गुणात्मक केस अध्ययनों के समावेश की अनुशंसा की जाती है।

संदर्भ सूची

1. कुमार, ए. (2015). बिहार में ग्रामीण बालिकाओं का विद्यालय त्याग: कारण एवं निवारण. *भारतीय शिक्षा समीक्षा*, 12(2), 45–62.
2. कोब, एस. (1976). Social support as a moderator of life stress. *Psychosomatic Medicine*, 38(5), 300–314.
3. गुप्ता, एस. एवं यादव, पी. (2020). ग्रामीण समुदायों में बालिका शिक्षा के प्रति बदलते दृष्टिकोण. *शिक्षा एवं समाज*, 18(1), 67–82.
4. चौहान, आर. (2021). कोविड-19 और बालिका शिक्षा: ग्रामीण भारत का परिप्रेक्ष्य. *समकालीन शिक्षा*, 19(2), 34–50.
5. जायसवाल, एन. (2023). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और बालिका शिक्षा: नीतिगत प्रावधानों की समीक्षा. *शिक्षा नीति पत्रिका*, 8(1), 23–38.
6. ड्रेज़, जिन एवं सेन, अमर्त्य (2013). *An Uncertain Glory: India and Its Contradictions*. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.
7. दुबे, एम. एवं वर्मा, के. (2022). सामाजिक समर्थन, आत्म-प्रभावकारिता और ग्रामीण बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षाएँ. *मनोविज्ञान अध्ययन*, 67(2), 189–204.
8. पांडेय, डी. (2017). बालिका शिक्षा में सहकर्मि समूह की भूमिका: एक गुणात्मक अध्ययन. *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका*, 36(1), 78–92.
9. ब्रोनफेनब्रेनर, यू. (1979). *The Ecology of Human Development: Experiments by Nature and Design*. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
10. मिश्रा, के. एवं सिंह, ए. (2018). शिक्षक-विद्यार्थी संबंध और ग्रामीण बालिकाओं का विद्यालयी ठहराव. *शिक्षक शिक्षा*, 20(2), 112–128.
11. रावत, पी. (2019). कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय: प्रभावशीलता का मूल्यांकन. *ग्रामीण शिक्षा शोध*, 7(1), 56–71.
12. शर्मा, एन. एवं त्रिपाठी, आर. (2016). माता की शैक्षिक स्थिति और बालिका शिक्षा की निरंतरता. *स्त्री शिक्षा पत्रिका*, 11(2), 34–49.
13. शिक्षा मंत्रालय (2022). *UDISE+ 2021-22 रिपोर्ट*. भारत सरकार, नई दिल्ली.
14. IIPS (2021). *राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5), 2019-21. अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, मुंबई*